1. पद (सूरदास)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सूरदास जी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उ०– कुछ विद्वानों के अनुसार सूरदास जी का जन्म आगरा से मथुरा जाने वाली सड़क पर स्थित रुनकता नामक गाँव में सन् 1478 ई. (वैशाख शुक्ल पंचमी, मंगलवार, संवत् 1535 वि.) में हुआ था।

2. सूरदास जी किस काल व किस शाखा के कवि थे?

उ०– सूरदास जी भक्तिकाल की कृष्णाश्रयी शाखा के कवि थे।

3. सूरदास जी के गुरु का क्या नाम था?

उ०– सूरदास जी के गुरु का नाम बल्लभाचार्य था।

4. 'अष्टछाप' से आप क्या समझते हैं?

उ०– आठ कृष्णभक्त कवियों के संगठन को अष्टछाप कहते हैं।

5. 'अष्टछाप' का संगठन किसने किया तथा इसे प्रमुख कवि कौन थे?

उ०– गुरु बल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने अष्टछाप का संगठन किया। इसके प्रमुख कवि सूरदास जी थे।

6. सूरदास जी की तीन प्रसिद्ध रचनाओं के नाम लिखिए।

उ०– सूरदास जी की तीन प्रसिद्ध रचनाएँ– 'सूरसागर', 'सूरसारावली' तथा 'साहित्य लहरी' हैं।

7. सूरदास जी ने अपनी कृतियों में किस भाषा का प्रयोग किया है?

उ०– सूरदार जी ने अपनी कृतियों में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।

8. सूरदास जी द्वारा रचित कृतियों के आधार पर भक्तिकाल की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उ०– (अ) अवतार–भावना (ब) वात्सल्य रस की प्रधानता

9. सूरदास जी की मृत्यु कब व कहाँ हुई?

उ०– सूरदास जी की मृत्यु सन् 1583 ई. में गोवर्द्धन की तलहटी में पारसोली नामक ग्राम में हुई थी।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सूरदार जी बार–बार भगवान के चरणों की वंदना क्यों करना चाहते हैं?

उ०– सूरदास जी बार–बार भगवान के चरणों की वंदना इसलिए करना चाहते हैं क्योंकि इनकी कृपा हो जाने पर लँगड़ा व्यक्ति पर्वतों को लाँघ जाता है, अंधा व्यक्ति सबकुछ देखने लगता है, बहरा व्यक्ति को सुनने लग जाता है तथा भिखारी व्यक्ति मुकुटधारी बन जाता है।

2. सूरदास जी द्वारा लिखित पद के आधार पर उन्होंने सगुण भक्ति मार्ग क्यों अपनाया?

उ०– सूरदास जी द्वारा लिखित पद के आधार पर उन्होंने सगुण भक्ति मार्ग इसलिए अपनाया है क्योंकि निर्गुण ब्रह्म का वर्णन करना अत्यंत कठिन है। उसकी स्थिति का वर्णन नहीं किया जा सकता। निर्गुण ब्रह्म की उपासना का आनंद किसी भक्त के लिए उसी प्रकार है जैसे गूँगे व्यक्ति के लिए मीठे फल का स्वाद, जिसे वह हृदय में अनुभव तो कर सकता है परंतु वाणी द्वारा उस आनंद का वर्णन नहीं कर सकता। इसी प्रकार निर्गुण ब्रह्म की भक्ति के आनंद को भी अनुभव किया जा सकता है, उसे वाणी द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता। अत: उन्होंने सगुण श्रीकृष्ण की लीला के पद गाना उचित समझा।

3. यशोदा देवकी के पास क्या संदेश भेजती है?

उ०– यशोदा देवकी के पास संदेश भेजती है कि मैं (यशोदा) श्रीकृष्ण की धाय हूँ। अत: आप मुझ पर कृपा करती रहना। यद्यपि आप श्रीकृष्ण को भली–भाँति जानती हैं, फिर भी मैं कुछ कहना चाहती हूँ। मेरे लाल को सुबह होते ही माखन–रोटी प्रिय लगती है। तेल, उबटन और गर्म पानी देखकर वह दूर भाग जाता था। वह उस समय जो मांगता, वही मैं उसे देती थी, तब वह स्नान करता था।

4. श्रीकृष्ण गाय चराने क्यों जाना चाहते हैं?

उ०– श्रीकृष्ण गाय चराने इसलिए जाना चाहते हैं क्योंकि उन्हें वन में ग्वालों और गायों के साथ जरा भी डर नहीं लगता है। उन्हें यह बात भी अच्छी नहीं लगती है कि अन्य सभी ग्वाले गाय चराने के लिए जंगल में आएँ और वह घर में बैठे रहें।

5. गोपियाँ श्रीकृष्ण की मुरली क्यों चुराना चाहती हैं?

उ०– गोपियाँ श्रीकृष्ण की मुरली इसलिए चुराना चाहती हैं क्योंकि वह इसे अपनी बैरी सौतन समझती हैं। इस मुरली ने अन्य सभी के प्रेम संबंधों को भुलाकर श्रीकृष्ण को अपने वश में कर लिया है। यह मुरली श्रीकृष्ण को इतनी प्रिय है कि वे दिन–रात्रि में एक क्षण के लिए भी इसे नहीं छोड़ते हैं। गोपियाँ समझती हैं कि इस मुरली ने श्रीकृष्ण का मन प्रेम की डोरी से बांधा हुआ है इसलिए वह इसे चुराकर श्रीकृष्ण से दूर करना चाहती हैं।

6. श्रीकृष्ण से ब्रज क्यों नहीं भूला जा रहा है?

उ०– श्रीकृष्ण से ब्रज इसलिए नहीं भूला जा रहा है क्योंकि उन्हें वृंदावन और गोकुल के वन, उपवन तथा कुंजों की छाँव अति प्रिय थी। नंदबाबा व यशोदा माता को देखकर जो सुख उन्हें मिलता था, उन्हें उसका बार–बार स्मरण आता है। यशोदा माता द्वारा प्रेम से माखन, रोटी व दही खिलाना वे नहीं भूल पाते हैं। उन्हें गोकुलवासियों के साथ विभिन्न प्रकार की क्रीड़ाएँ करने में परमसुख प्राप्त होता था, जिसे वह बार–बार स्मरण करते हैं।

7. यदि गोपियों के दस–बीस मन होते तो क्या होता?

उ०– यदि गोपियों के पास दस–बीस मन होते, तो वे उद्धव के द्वारा बताए गए निर्गुण ब्रह्म की उपासना के मार्ग पर चलती परंतु उनके पास तो एक ही मन है जो श्रीकृष्ण के प्रेम में लीन है और उन्हीं के साथ मथुरा चला गया है।

8. उद्धव गोपियों को क्या समझाने गोकुल गए थे? गोपियों ने उद्धव को क्या उत्तर दिया?

उ०– उद्धव गोकुल में गोपियों को निर्गुण ब्रह्म की उपासना का मार्ग समझाने गए थे क्योंकि कृष्ण के प्रेम में लीन गोपियों की दशा खराब थी, वह दिन–रात केवल श्रीकृष्ण का ही मार्ग देखती थीं। परंतु गोपियों ने उद्धव को उत्तर दिया कि उनके पास दस–बीस मन नहीं हैं जो वे निर्गुण बह्म की उपासना कर सके। उनके पास तो केवल एक ही मन है जो श्रीकृष्ण के प्रेम में लीन उन्हीं के साथ चला गया है। श्रीकृष्ण के लौटने की आशा में ही उनकी श्वास चल रही है और इस आशा में हम करोड़ों वर्षों तक जीवित रह सकती हैं।

9. सूरदास जी के पदों के आधार पर उद्धव-गोपी संवाद का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– यह संवाद 'भ्रमरगीत' प्रसंग का एक सरस अंग है। श्रीकृष्ण के मथुरा जाने के बाद गोपियां अति व्याकुल हैं। उद्धव जी श्रीकृष्ण का संदेश लेकर ब्रज आते हैं और गोपियों को योग की शिक्षा देते हैं जिस पर असमर्थता जताते हुए गोपी कहती हैं— उद्धव हमारे दस-बीस मन नहीं हैं जो हम निर्गुण बह्म की उपासना करें, हमारा तो एक ही मन है, जो श्रीकृष्ण के प्रेम में लीन है और उन्हीं के साथ मथुरा चला गया है। उनके जाने के बाद हमारा शरीर उसी प्रकार शक्तिहीन व निर्बल है जिस प्रकार बिना सिर वाला धड़। श्रीकृष्ण के मथुरा से वापस लौटने की आशा में ही हमारे शरीर में श्वास चल रही है और इस आशा में हम करोड़ों वर्षों तक जीवित रह सकती हैं। तुम तो श्रीकृष्ण के परममित्र व सभी प्रकार के योग के स्वामी हो, आप ही श्रीकृष्ण से हमारा मिलन करा दो। उद्धव से गोपियाँ कहती हैं कि श्रीकृष्ण के अलावा हमारा कोई भी आराध्य नहीं है।

गोपियाँ उद्धव से परिहास करती हुई कहती हैं कि उद्धव हमें लगता है कि श्रीकृष्ण ने तुम्हें नहीं भेजा है, तुम तो कहीं से भटकते हुए आ गए हो। तुम्हें ब्रज की नारियों से योग की बात करते हुए लज्जा नहीं आती है। वैसे तो तुम बड़े सयाने बनते हो परंतु तुम विवेक की बात नहीं करते हो। तुमने हमसे जो कुछ भी कहा वह हमने सहन कर लिया परंतु क्या तुमने योग की अवस्था का विचार किया है? इसलिए अब तुम चुप रहो। गोपियाँ उद्धव से शपथ देकर उद्धव को गोकुल भेजते समय श्रीकृष्ण की प्रतिक्रिया के बारे में पूछती हैं।

गोपियाँ उद्धव की निर्गुण ब्रह्म की उपासना के उपदेश से परेशान होकर उससे पूछती हैं कि हे उद्धव! निर्गुण ब्रह्म किस देश का वासी है, उसके माता-पिता कौन हैं? स्त्री और दासी कौन हैं? उसका रंग व वेश कैसा है? उन्हें किस रंग से लगाव है? तुम हमें ठीक से बताओ, यदि तुम कपट करोगे, तो इसका फल अवश्य पाओगे। गोपियों के ऐसे तर्कपूर्ण प्रश्न सुनकर उद्धव ठगे से रह गए और उनका सारा ज्ञान का गर्व समाप्त हो गया।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. सूरदास जी का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– सूरदास जी को भक्तिकाल की कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि व वात्सल्य रस का सम्राट माना जाता है। इन्होंने अपने पदों में श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं और प्रेमलीलाओं का बहुत मनमोहक चित्रण किया है। हिंदी कविता कामिनी के इस कमनीय कांत ने हिंदी भाषा को समृद्ध करने में जो योगदान दिया है, वह अद्वितीय है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इनके विषय में लिखा भी है, ''वात्सल्य और श्रृंगार के क्षेत्रों का जितना अधिक वर्णन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया, उतना संसार के किसी और कवि ने नहीं। इन क्षेत्रों का वे कोना-कोना झाँक आए।''

जीवन परिचय– सूरदास जी के जन्म व जन्म-स्थान के संबंध में विद्वानों में मतभेद हैं। साहित्यलहरी सूरदास जी की रचना है। इसमें साहित्यलहरी के रचना-काल के संबंध में निम्न पद मिलता है—

मुनि पुनि के रस लेख।
दसन गौरीनंद को लिखि सुवल संवत् पेख॥

इसका अर्थ विद्वानों ने संवत् 1607 वि. माना है, इसलिए 'साहित्यलहरी' का रचना-काल संवत् 1607 वि. माना जाता है। सूरदास जी का जन्म सं. 1537 वि. के लगभग मानते हैं क्योंकि बल्लभ संप्रदाय में ऐसी मान्यता है कि बल्लभाचार्य सूरदास से दस दिन बड़े थे और बल्लभाचार्य का जन्म उक्त संवत् की वैशाख कृष्ण एकादशी को हुआ था। इसलिए सूरदास की जन्म-तिथि वैशाख शुक्ल पंचमी, संवत् 1535 वि. मानते हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार सूरदास जी का जन्म आगरा से मथुरा जाने वाली सड़क पर स्थित रुनकता नामक गाँव में सन् 1478 ई. (वैशाख शुक्ल पंचमी, मंगलवार, संवत् 1535 वि.) में हुआ था। कुछ विद्वान् इनका जन्म दिल्ली के निकट सीही ग्राम में मानते हैं। इनके पिता पं. रामदास थे, जो एक सारस्वत ब्राह्मण थे। सूरदास जन्मान्ध थे या नहीं, इस संबंध में भी अनेक मत हैं। श्यामसुंदर दास ने इनके बारे में लिखा है—''सूर वास्तव में जन्मान्ध नहीं थे, क्योंकि श्रृंगार व रंग-रूपादि का जो वर्णन उन्होंने किया है वैसा कोई जन्मान्ध नहीं कर सकता।'' अत: ऐसा माना जाता है कि ये जन्म के बाद अंधे हुए होंगे। सूरदास जी द्वारा लिखित निम्न पंक्ति से इस बात का पता चलता है—'**श्री गुरु बल्लभ तत्व सुनायो, लीला भेद बतायो।**' सूरदास जी पहले दीनता के पद गाया करते थे, किंतु बल्लभाचार्य के संपर्क में आने के बाद ये कृष्ण लीला का गान करने लगे। सूरदास से प्रभावित होकर ही तुलसीदास ने 'श्रीकृष्णगीतावली' की रचना की थी।

बल्लभाचार्य के पुत्र बिट्ठलनाथ ने 'अष्टछाप' के नाम से आठ कृष्णभक्त कवियों का संगठन किया था। सूरदास अष्टछाप के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। बिट्ठलनाथ ने इन्हें 'पुष्टिमार्ग का जहाज' कहा है। इनका देहावसान सन् 1583 ई. में गोसाई

बिट्ठलनाथ के सामने गोवर्द्धन की तलहटी में पारसोली नामक ग्राम में हुआ था। निम्नलिखित गुरु वंदना संबंधी पद का गान करते हुए इन्होंने अपने शरीर को त्यागा—

भरोसो दृढ़ इन चरनन केरो।
श्रीबल्लभ नख-छंद-छटा बिनु सब जग माँझ अँधेरो।।

साहित्यिक परिचय– सूरदार ने प्रेम और विरह के द्वारा सगुण मार्ग से कृष्ण को साध्य माना था। उनके कृष्ण सखा रूप में सर्वशक्तिमान परमेश्वर थे। सूरदास ने कृष्ण की बाल-लीलाओं का बड़ा ही मनोरम वर्णन किया है।

बाल-जीवन का कोई पक्ष ऐसा नहीं, जिस पर इनकी दृष्टि न पड़ी हो। इसलिए इनका बाल-वर्णन विश्व-साहित्य की अमर-निधि बन गया है। 'सूरदास' का एक प्रसंग 'भ्रमरगीत' कहलाता है। इस प्रसंग में गोपियों के प्रेमावेश ने ज्ञानी उद्धव को भी प्रेमी व भक्त बना दिया। इनके विरह-वर्णन में गोपियों के साथ-साथ ब्रज की प्रकृति भी विषादमग्न दिखाई देती है।

2. सूरदास जी की कृतियों व भाषागत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उ०– रचनाएँ– सूरदास जी द्वारा लिखित ग्रंथ निम्नलिखित हैं—

(अ) सूरसागर– यह सूरदास जी की प्रसिद्ध रचना है। जिसमें इन्होंने सवा लाख पद संग्रहित किए थे। परंतु अब सात-आठ हजार पद ही मिलते हैं।

(ब) सूरसारावली– यह ग्रंथ अभी तक विवादास्पद स्थिति में है परंतु कथावस्तु, भाव, भाषा-शैली और रचना की दृष्टि से नि:संदेह सूरदास जी की प्रामाणिक रचना है। इनमें 1,107 छंद हैं।

(स) साहित्यलहरी– 'साहित्यलहरी' में सूरदास के 118 दृष्टकूट पदों का संग्रह है। 'साहित्यलहरी' में किसी एक विषय की विवेचना नहीं की गई है। इसमें मुख्य रूप से नायिकाओं एवं अलंकारों की विवेचना की गई है। कहीं-कहीं पर श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन भी किया गया है तथा एक-दो स्थानों पर 'महाभारत' की कथा के अंशों की भी झलक है।

भाषागत विशेषताएँ– गहन दार्शनिक भावों को कोमल एवं सुकुमार भावनाओं के माध्यम से व्यक्त करना इनके काव्य की प्रमुख विशेषता है। इनकी कविताओं में भावपक्ष और कलापक्ष दोनों समान रूप से प्रभावपूर्ण हैं। सभी पद गेय हैं, अत: उनमें माधुर्य गुण की प्रधानता है। इनके काव्यों में भाव-साम्य पर आधारित उपमाओं, उत्प्रेक्षाओं और रूपकों का प्रभाव देखने को मिलता है। इनकी कविताएँ ब्रजभाषा में हैं। माधुर्य की प्रधानता के कारण भाषा बड़ी प्रभावोत्पादक हो गई है।

सूरदास जी ने सरल एवं प्रभावपूर्ण शैली का प्रयोग किया है। इनका काव्य मुक्तक शैली पर आधारित है। कुछ रचनाओं में सूरदास ने कथा-वर्णन शैली का प्रयोग भी किया है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) चरन-कमल बंदौं ..... बंदौं तिहिं पाइ।।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' में 'सूरदास' द्वारा रचित 'सूरसागर' ग्रंथ से 'पद' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इस पद्य में भक्त कवि सूरदास जी ने श्रीकृष्ण की महिमा का वर्णन करते हुए उनके चरणों की वंदना की है।

व्याख्या– सूरदास जी श्रीकृष्ण के कमलरूपी चरणों की वंदना करते हुए कहते हैं कि इन चरणों का प्रभाव बहुत व्यापक है। इनकी कृपा हो जाने पर लँगड़ा व्यक्ति भी पर्वतों को लाँघ लेता है और अंधे को सब कुछ दिखाई देने लगता है। इन चरणों के अनोखे प्रभाव के कारण बहरा व्यक्ति सुनने लगता है और गूँगा पुन: बोलने लगता है। किसी दरिद्र व्यक्ति पर श्रीकृष्ण के चरणों की कृपा हो जाने पर वह राजा बनकर अपने सिर पर राज-छत्र धारण कर लेता है। सूरदास जी कहते हैं कि ऐसे दयालु प्रभु श्रीकृष्ण के चरणों की मैं बार-बार वंदना करता हूँ।

काव्यगत सौंदर्य– 1. ईश्वर के चरणों की महिमा का वर्णन करते हुए उनके प्रति भक्ति भाव की शक्ति का महत्व बताया गया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** भक्ति **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** रूपक, पुनरुक्तिप्रकाश और अनुप्रास **7. छंद–** गेय पद।

(ब) मैं अपनी सब गाइ ..... प्रात जान में दैहौं।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद में बालक श्रीकृष्ण की माता यशोदा से किए जा रहे स्वाभाविक बाल-हठ का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– श्रीकृष्ण अपनी माता यशोदा से हठ करते हुए कहते हैं कि हे माता! मैं अपनी सब गायों को चराने के लिए वन में जाऊँगा। प्रात: होते ही मैं अपने बड़े भाई बलराम के साथ गाएँ चराने चला जाऊँगा और तुम्हारे रोकने पर भी न रुकूँगा। मुझे ग्वाल-बालों और गायों के बीच में रहते हुए जरा भी भय नहीं लगता। मैं नंद बाबा की कसम खाकर कहता हूँ कि आज रात्रि में मैं जागता रहूँगा, सोऊँगा नहीं। कहीं ऐसा न हो कि सवेरा होने पर मेरी आँखें ही न खुलें और मैं गायें चराने न जा सकूँ। हे माता! ऐसा नहीं हो सकता कि सब ग्वाले तो गायें चराने चले जाएँ और मैं अकेला घर पर बैठा रहूँ। सूरदास जी कहते हैं कि बालक श्रीकृष्ण की बात सुनकर माता यशोदा उनसे कहती हैं कि मेरे लाल! अब तुम निश्चित होकर सो जाओ। प्रात:काल मैं तुम्हें गायें चराने के लिए अवश्य जाने दूँगी।

काव्यगत सौंदर्य– 1. इस पद में सूरदास के बाल-चित्रण की अद्‌भुत प्रतिभा का दर्शन होता है। **2.** श्रीकृष्ण द्वारा गाय चराने की बाल हठ की स्वाभाविक एवं सजीव अभिव्यक्ति की गई है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** वात्सल्य **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास **8. छंद–** गेय पद।

(स) सखी री, मुरली ..... राग की डोरि।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद में सूरदास जी ने वंशी के प्रति गोपियों के ईर्ष्या-भाव को व्यक्त किया है।

व्याख्या– गोपियाँ श्रीकृष्ण की वंशी को अपनी वैरी सौतन समझती हैं। एक गोपी दूसरी गोपी से कहती है कि हे सखी! अब हमें श्रीकृष्ण की यह मुरली चुरानी होगी; क्योंकि इस मुरली ने गोपाल को अपनी ओर आकर्षित कर अपने वश में कर लिया है और श्रीकृष्ण ने भी मुरली के वशीभूत होकर हम सभी को भुला दिया है। कृष्ण घर के भीतर हों या बाहर, कभी क्षणभर को भी मुरली नहीं छोड़ते। कभी हाथ में रखते हैं तो कभी होंठों पर और कभी कमर में खोंस लेते हैं। इस तरह से श्रीकृष्ण उसे कभी भी अपने से दूर नहीं होने देते। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है कि वंशी ने कौन-सा मोहिनी मंत्र श्रीकृष्ण पर चला दिया है, जिससे श्रीकृष्ण पूरी तरह से उसके वश में हो गए हैं। सूरदास जी कहते हैं कि गोपी कह रही है कि हे सजनी! इस वंशी ने श्रीकृष्ण का मन प्रेम की डोरी से बाँधकर कैद कर लिया है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रस्तुत पद में सूरदास जी ने मुरली के प्रति गोपियों के मन में उठने वाले ईर्ष्या के भाव का सजीव और स्वाभाविक वर्णन किया है। **2.** गोपियाँ मुरली को अपनी सौत समझती हैं क्योंकि वह कृष्ण को अति प्रिय है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक और गीताम्क **5. रस–** शृंगार **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास और रूपक **8. छंद–** गेय पद, **9. शब्द-शक्ति–** लक्षणा।

(द) ऊधौ मोहिं ब्रज ..... हित जदु-तात।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पद में उद्धव ने मथुरा पहुँचकर श्रीकृष्ण को वहाँ की सारी स्थिति बताई, जिसे सुनकर श्रीकृष्ण भाव-विभोर हो गए। इस पर वे उद्धव से अपनी मनोदशा व्यक्त करते हैं।

व्याख्या– उद्धव द्वारा ब्रजवासियों की दीन-दशा के बारे में सुनकर श्रीकृष्ण जी भाव-विभोर हो जाते हैं और उनके ध्यान में खो जाते हैं। वे उद्धव से कहते हैं कि मैं ब्रज को भूल नहीं पाता हूँ। वृंदावन और गोकुल के वन-उपवन सभी मुझे याद आते रहते हैं। वहाँ के घने कुंजों की छाया को भी मैं भूल नहीं पाता। नंदबाबा और यशोदा मैया को देखकर मुझे जो सुख मिलता था, वह मुझे रह-रहकर याद आता है। वे मुझे मक्खन, रोटी और भली प्रकार जमाया हुआ दही कितने प्रेम से खिलाते थे? ब्रज की गोपियों और ग्वाल-वालों के साथ खेलते हुए मेरे सभी दिन हँसते हुए बीता करते थे। ये सभी बातें मुझे बहुत याद आती हैं। सूरदास जी ब्रजवासियों को धन्य मानते हैं और उनके भाग्य की सराहना करते हैं; क्योंकि श्रीकृष्ण को उनके हित की चिंता है और श्रीकृष्ण इन ब्रजवासियों का प्रति क्षण ध्यान करते हैं।

काव्यगत सौंदर्य- 1. इस पद में श्रीकृष्ण के भावुक हृदय के सात्विक भावों की व्यंजना हुई है। **2.** अपने ब्रज-प्रवास के विभिन्न कार्यों की याद श्रीकृष्ण को व्याकुल कर देती है। सूरदास भी ऐसे स्थानों पर द्रवित हो जाते हैं। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** वियोग शृंगार **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास और विरोधाभास **8. छंद–** गेय पद।

(य) ऊधौ जाहु तुमहिं ..... तब नैकहुँ मुसकाने।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद में गोपियाँ उद्धव के साथ परिहास करती हैं और कहती हैं कि श्रीकृष्ण ने तुम्हें यहाँ नहीं भेजा है, वरन् तुम अपना मार्ग भूलकर यहाँ आ गए हो या श्रीकृष्ण ने तुम्हें यहाँ भेजकर तुम्हारे साथ मजाक किया है।

व्याख्या– गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि तुम यहाँ से वापस चले जाओ। हम तुम्हें समझ गई हैं। श्याम ने तुम्हें यहाँ नहीं भेजा है। तुम स्वयं बीच से रास्ता भूलकर यहाँ आ गए हो। ब्रज की नारियों से योग की बात करते हुए तुम्हे लज्जा नहीं आ रही है। तुम बुद्धिमान और ज्ञानी होंगे,परंतु हमें ऐसा लगता है कि तुममें विवेक नहीं है, नहीं तो तुम ऐसी अज्ञानतापूर्ण बातें हमसें क्यों करते? तुम अच्छी प्रकार मन में विचार लो कि हमसे ऐसा कह दिया तो कह दिया, अब ब्रज में किसी अन्य से ऐसी बात न कहना। हमने तो सहन भी कर लिया, कोई दूसरी गोपी इसे सहन नहीं करेगी। कहाँ तो हम अबला नारियाँ और कहाँ योग की नग्न अवस्था, अब तुम चुप हो जाओ और सोच-समझकर बात कहो। हम तुमसे एक अंतिम सवाल पूछती हैं, सच-सच बताना, तुम्हें अपनी कसम है, जो तुम सच न बोले। सूरदास जी कहते है कि गोपियाँ उद्धव से पूछ रही हैं कि जब श्रीकृष्ण ने उनको यहाँ भेजा था, उस समय वे थोड़ा-सा मुस्कराए या नहीं? वे अवश्य मुस्कराए होंगे, तभी तो उन्होंने तुम्हारे साथ उपहास करने के लिए तुम्हें यहाँ भेजा है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. शपथ देकर पूछने से गोपियों के मन में छिपी प्रेम-भावना व्यक्त हुई है। गोपियाँ मानती हैं कि चतुर श्रीकृष्ण ने उद्धव को प्रेम की शिक्षा प्राप्त करने के लिए ही ब्रज में भेजा है। **2.** यहाँ गोपियों के आक्रोश और तर्कशीलता का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** वियोग शृंगार **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास **8. छंद–** गेय पद।

(र) निरगुन कौन देस ..... सबै मति-नासी।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद में सूरदास ने गोपियों के माध्यम से निर्गुण ब्रह्म की उपासना का खंडन तथा सगुण कृष्ण की भक्ति का मंडन किया है।

व्याख्या– गोपियाँ 'भ्रमर' की अन्योक्ति से उद्धव को संबोधित करती हुई पूछती हैं कि हे उद्धव! तुम यह बताओ तुम्हारा वह निर्गुण ब्रह्म किस देश का रहने वाला है? हम तुमको शपथ दिलाकर सच-सच पूछ रही हैं, कोई हँसी (मजाक) नहीं कर रही हैं। तुम यह बताओ कि उस निर्गुण का पिता कौन है? उसकी माता का क्या नाम है? उसकी पत्नी और दासियाँ कौन-कौन हैं? उस निर्गुण ब्रह्म का रंग कैसा है, उसकी वेश-भूषा कैसी है और उसकी किस रस में रुचि है? गोपियाँ उद्धव को चेतावनी देती हुई कहती हैं कि हमें सभी बातों का ठीक-ठीक उत्तर देना। यदि सही बात बताने में जरा भी छल-कपट करोगे तो अपने किए का फल अवश्य पाओगे। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियों के ऐसे प्रश्नों को सुनकर ज्ञानी उद्धव ठगे से रह गए और उनका सारा ज्ञान-गर्व अनपढ़ गोपियों के सामने नष्ट हो गया।

काव्यगत सौंदर्य– 1. ज्ञानियों का विवेक भी अज्ञानियों के तर्क के सामने शून्य होकर रह जाता है। सूरदास ने निर्गुण ब्रह्म के प्रति अज्ञानता से भरी गोपियों के अद्‌भुत तर्क से हुई उद्धव की विचित्र मनोदशा का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। **2.** गोपियों के प्रश्न सीधे-सादे होकर भी व्यंग्यपूर्ण हैं। यहाँ कवि की कल्पना शक्ति और स्त्रियों की अन्योक्ति में व्यंग्य करने की स्वभावगत प्रवृत्ति का बड़ा ही मनोरम वर्णन हुआ है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** वियोग शृंगार **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास, मानवीकरण और अन्योक्ति **8. छंद–** गेय पद।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) चरन-कमल बंदौ हरि राइ।

भाव-स्पष्टीकरण– यहाँ कवि सूरदास के भाव तीनों लोकों के नाथ श्रीकृष्ण के चरणों की बार-बार वंदना करने से है क्योंकि इनकी कृपा दृष्टि होने पर लँगड़ा व्यक्ति पर्वत लाँघ सकता है, अंधा देख सकता है, बहरा सुन सकता है और दरिद्र व्यक्ति मुकुटधारी राजा बन सकता है अर्थात् केवल इनकी कृपा दृष्टि से ही असंभव काम भी संभव बन सकते हैं।

(ब) रूप-रेख-गुन-जाति-जुगति- बिनु निरालंब कित धावै।

भाव-स्पष्टीकरण– सूरदास जी निर्गुण बह्म की अपेक्षा सगुण श्रीकृष्ण के उपासक थे। वे कहते हैं कि निर्गुण ब्रह्म का न तो कोई रूप है, न ही आकृति है, न ही उसकी कोई विशेषता है, न ही जाति और न ही उसे प्राप्त करने की कोई युक्ति है। ऐसी स्थिति में बिना किसी आधार के भक्त कहाँ-कहाँ दौड़ते रहें। अत: इससे तो सगुण ब्रह्म की लीलाओं का वर्णन करना ही ठीक है।

(स) कौ है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी?

भाव-स्पष्टीकरण– यहाँ सूरदास जी ने गोपियों के माध्यम से निर्गुण बह्म के प्रति संदेहता व्यक्त करते हुए कहा है कि निर्गुण ब्रह्म कौन है, उनके माता-पिता कौन हैं, उनकी पत्नी व दासी कौन है अर्थात् सूरदास जी निर्गुण ब्रह्म के बारे में सारी बातें जानना चाहते हैं। जिससे उन्हें उन पर विश्वास हो जाए।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सूरदार जी किस भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं–

(अ) ज्ञानाश्रयी (ब) प्रेमाश्रयी

(स) रामाश्रयी (द) **कृष्णाश्रयी**

2. निम्न में से कौन-सी कृति सूरदास जी की है?

(अ) **सूरसागर** (ब) प्रेमवाटिका

(स) नीहार (द) सांध्यगीत

3. अष्टछाप कितने कवियों का संगठन है?

(अ) **आठ** (ब) तीन

(स) पाँच (द) चार

4. सगुणमार्गी कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं–

(अ) घनानंद (ब) तुलसीदास

(स) कबीरदास (द) **सूरदास**

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार, रस व उसके स्थायी भाव की विवेचना कीजिए–

(अ) चरन कमल बंदौ हरि राइ।

उ०– अलंकार – रूपक

रस – भक्ति

स्थायीभाव – देव विषयक रति

(ब) रूप-रेख-गुन-जाति- जुगति बिनु निरालंब कित धावै।
सब विधि आगम बिचारहिं तातैं सूर सगुन-पद गावै।।

उ०– अलंकार – अनुप्रास

रस – भक्ति

स्थायी भाव – देव-विषयक रति

(स) कनक-भूमि पर कर-पग छाया, यह उपमा इक राजति।

उ०– अलंकार – उपमा और अनुप्रास

रस – वात्सल्य

स्थायी भाव – संतान-विषयक रति

(द) जोइ-जोइ माँगत सोइ-सोइ देती, क्रम-क्रम करि कै न्हाते।।

उ०– अलंकार – पुरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास

रस – वात्सल्य

स्थायी भाव – संतान-विषयक रति

(य) निरगुन कौन देश कौ बासी?

उ०– अलंकार – मानवीकरण

रस – हास्य

स्थायी भाव – हास

2. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव और देशज शब्द छाँटकर अलग-अलग लिखिए–

उ०– तत्सम – ग्वाल, गृह, बिम्ब, पंगु, करि, सघन, सखा

देशज – छोटा, टेव, अलक, लड़ैतो, कान्ह

तद्भव – चरन, जोग, इंद्री, पानि, नैन

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।